।। श्री श्याम दुःख भंजनाष्टक ।।

युद्ध समय दुहुँ पक्ष जुरै जब, बाण प्रताप जु तुम दिखलायो।

ताहि सो त्रास भयो सबको यह, वीर अजेय कहाँ तें है आयो।।

मांगि लियो तब शीर हरि करि, मोद दियो नहि नेकु संकारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

संकट में जब भक्त परे कोई, श्यामहि श्याम रटे जु विचारो।
नीज तुरंग सवार महाप्रभु, आइवै ताहि को संकट टारो।।

संकट ग्रस्त बचाये किते जन, मोहिं भी आनिके बेगि उबारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

धाई के कोई मनोरथ लेकछु, श्याम जू आन गहे तेरे द्वारो।
आरत बैन कहै जो निरन्तर, तेरो हूँ नाथ। न और सहारो।।

ऐसे दुखी अरु तप्त सुभक्त को हाथ पकरि प्रभु आय उबारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

चौरन त्रास दई जन को तब 'जात्री' जु आवत ले उपहारो।
लुटि के माल जु लान लगै, तब अन्ध मये राह सुझारो।।

'त्राहिकरि' जब माल दियो सब, पायो महादुःख तै छुटकारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

नौरंगशाह अनीति करि जब मन्दिर ते सब देव उखारी।
ताहि समय निज रूप अलौपि कै, लीन हुए प्रभु कूप मॅझारी।।

पाई समय पुन स्वप्न दरस दै श्यामजी कुंड ते नव तनु धरौं।
को नहि जानत है जग में है, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

देबी पहाड़ चड़ी भय तैं जब ठोर नहि बचने को जु पायो।
भैरव भागत भागत ही, तब ठोरे न एक बसे भय खायो।।

श्याम तुम्ही सब की पत राखी, औटि सबै खल सस्त्र पदारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

जोरि के हाथ और शीश झुकाकरि, भेट चढ़ा फल इष्ट विचारे।
पावन चित्त ते ध्यान करे अरु आरत है तब नाम पुकारे।।

बेगि मनोरथ पूर्ण होंहि तब ऐसो प्रताप है तब उजियारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

काज किये सब भक्तन के तुम श्याम महाप्रभु देखी विचारो।
कौन सो संकट है मेरो अड्यौ प्रभु जो तुमसे नहि जात है टारो।।

बेगि हरो श्री श्याम महाप्रभु जो कछु संकट होय हमारो।
को नहि जानत है जग में, तब नाम महादुःख भंजन हारो।।

श्याम देह ज्योति लसै, कुण्डल सुशोभित रूप।
दिव्य देह दारिद दलन, जै जै श्याम सुर भूप।।